Date:- 16-04-2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. Snehababli1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A.(I) Hons

Topic - Refutation of Shabdh Pramaan in Charvaka.

Scanned with CamScanner

शब्द प्रमाण का खंडन

1. चार्वाक शब्द को भी प्रमाण नहीं मानते हैं। शब्द को इसलिए प्रमाण माना जाता है क्योंकि वह आप्त पुरुषों या विश्वसनीय व्यक्तियों का कथन होता है। चार्वाक मतानुसार शब्द से ज्ञान प्राप्ति अनुमान पर आश्रित होती है, जैसे-

सभी विश्वसयोग्य व्यक्तियों के वाक्य मान्य है।
यह विश्वासयोग्य व्यक्ति का वाक्य है।
अतः यह मान्य है।

चार्वाक मतानुसार 'कोई व्यक्ति आप्त पुरुष है' या 'आप्त पुरुष का कथन विश्वास करने योग्य है' यह अनुमान पर आधारित है। चूँकि अनुमान स्वयं प्रमाण नहीं है अतः अनुमान पर आधारित शब्द भी प्रमाण नहीं है।

Scanned with CamScanner

2. चार्वाक वेदों को भी प्रमाण नहीं मानते। उनके अनुसार वेद अनैकान्तिकता, असंगति और पुनरुक्ति के दोषों से भरे हुए हैं। इसमें स्वर्ग, नरक, आत्मा आदि अतिन्द्रिय विषयों का वर्णन है। इसकी रचना स्वार्थी लोगों द्वारा अपनी जीविका का प्रबंध करने के लिए किया गया है।

उपमान प्रमाण का खंडन

चार्वाक दार्शनिक उपमान की प्रमाणिकता को भी खण्डित करते हैं। चूँकि उपमान का आधार सादृश्य ज्ञान है, और सादृश्यता का ज्ञान प्रत्यक्ष से होता है। अतः चार्वाक इसके लिए प्रत्यक्ष से भिन्न किसी स्वतंत्र प्रमाण (उपमान) की आवश्यकता का निषेध करते हैं।

इस प्रकार चार्वाक अनुमान, शब्द और उपमान की प्रमाणिकता का खंडन करते हैं। इसके फलस्वरूप यहाँ प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण के रूप में बचता है। चार्वाक की यह प्रत्यक्ष-वादी ज्ञानमीमांसा तत्वमीमांसा के क्षेत्र में भौतिकवाद और आचार-मीमांसा में सुखवाद की स्थापना करता है।

Scanned with CamScanner

आलोचना

चार्वाक द्वारा अनुमान के खंडन के विरुद्ध मुख्य तर्क निम्नलिखित हैं :-

1. यदि चार्वाक से यह प्रश्न पूछा जाए की केवल प्रत्यक्ष को ही क्यों प्रमाण माना जाए तो वे या तो मौन रहेंगे या उत्तर देंगे कि अभ्रांत एवं निश्चयात्मक होने के कारण यह सर्वथा मान्य है। यदि वे मौन रहते हैं तो स्पष्टतः उनके पास अपने मत के लिए कोई प्रमाण नहीं है। यदि वे दूसरे विकल्पों को स्वीकार करते हैं तो फिर वे स्वयं अनुमान की सहायता लेते हैं। क्योंकि कुछ प्रत्यक्षों के निश्चित और असंदिग्ध होने के कारण वे सभी प्रत्यक्षों के भी निश्चित एवं असंदिग्ध होने का अनुमान कर लेते हैं।

2. प्रत्यक्ष प्रमाण के समर्थन में दी गई उनकी यह युक्ति की यह निर्विवाद और दोषरहित होता है,

Scanned with CamScanner

अनुमान एवं शब्द पर भी लागू होती है। इसलिए अनुमान और शब्द भी स्वीकार योग्य है। यदि चार्वाक यहां यह कहें कि अनुमान और शब्द कभी-कभी दोषयुक्त होते हैं तो यह आक्षेप प्रत्यक्ष पर भी लगाया जा सकता है। क्योंकि कभी-कभी प्रत्यक्ष भी दोषयुक्त और भ्रमात्मक होता है, यथा - रज्जू में सर्प का प्रत्यक्ष, सीपी में चांदी का प्रत्यक्ष।

3. व्यवहारिक जीवन की सफलता के लिए अनुमान को ज्ञान के सर्वोत्तम साधन के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है। दैनिक जीवन में तर्क-वितर्क, सत्य प्राप्ति हेतु साधनों का चयन, वैज्ञानिक अनुसंधान आदि के लिए अनुमान आवश्यक है।

4. चार्वाक ने अनुमान का खण्डन जिन-जिन तर्कों से किया है, वे तर्क कालान्तर में अनुमान की ही पुष्टि करते हैं। अनुमान का तत्व तर्क है। तर्क और अनुमान मानसिक क्रियाएँ है।

Scanned with CamScanner

अतः दोनों अभौतिक हैं। चार्वाक अभौतिक सत्ताओं को स्वीकार नहीं करता। परन्तु उसे अपने निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए अभौतिक प्रक्रियाओं का सहारा लेना पड़ता है। सिद्धान्त या विचार अभौतिक हैं। इसलिए उन्हें अनुमित ही किया जा सकता है, प्रत्यक्ष नहीं। स्पष्ट है कि अनुमान के अभाव में चार्वाक अपने विचार तक नहीं पहुँच सकता।

मूल्यांकन

~~चार्वाक~~ के प्रत्यक्षवादी ज्ञानमीमांसा में गंभीर विसंगतियां विद्यमान हैं। वे अनुमान, शब्द और उपमान के खंडन में तर्कतः सफल नहीं हो पाए हैं। फिर भी इनके ज्ञानमीमांसीय विचारों की अपनी महत्ता है। इनके ज्ञानमीमांसीय विचारों ने भारतीय विचारकों के समक्ष अनेक समस्याएं पैदा कि जिनका समाधान करने के लिए वे विवश हुए। फलस्वरूप भारतीय दर्शन पुष्ट, समृद्ध और विकसित हुआ। पुनः चार्वाक विचारकों ने भारतीय दर्शन को रूढ़िवादी और अंधविश्वासी होने से बचाया।

Scanned with CamScanner